एब लिंकन

और गंदा सूअर

एब लिंकन

और गंदा सूअर

युवा एब लिंकन थोड़ा हड़बड़ी में थे.
हर दिन अपना अधिकतर समय वह खेत में या
फिर फुटकर काम करते हुए बिताते थे.
लेकिन आज अलग ही बात थी.
आज एक महत्वपूर्ण भाषण देने के लिए
वह नगर जा रहे थे.
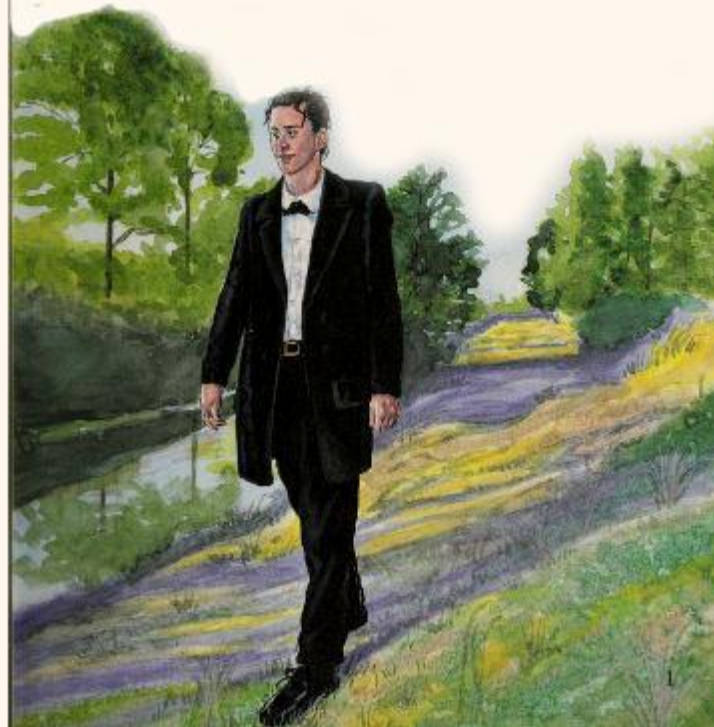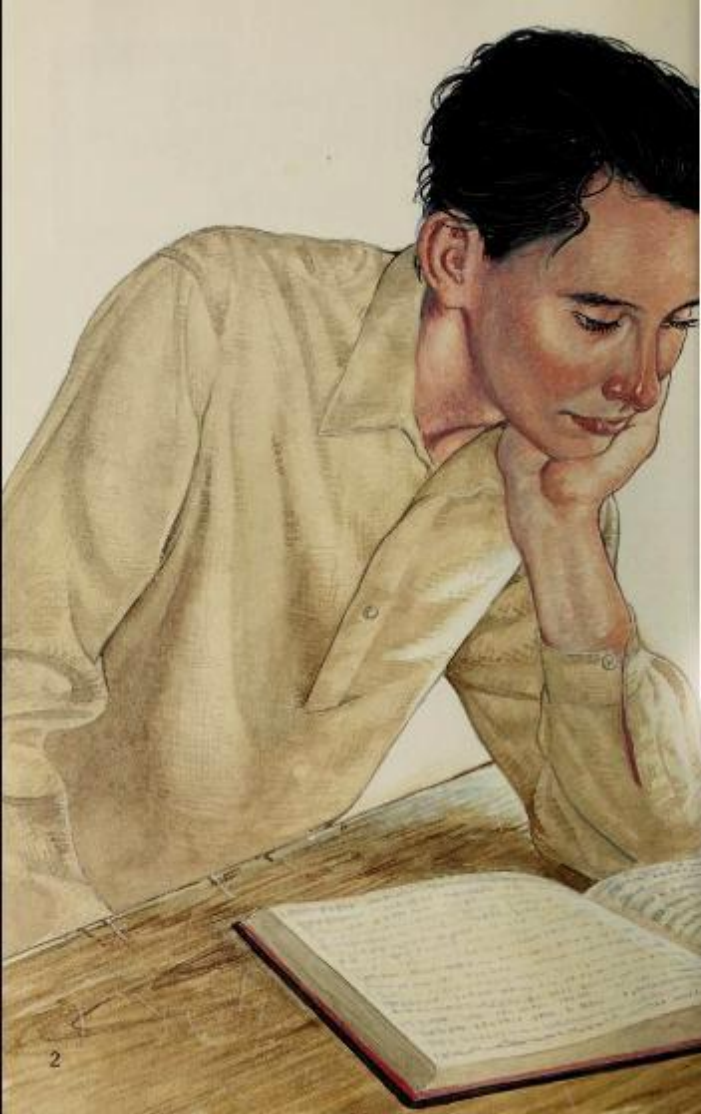
एब को भाषण देना अच्छा लगता था.
वह बहुत थोड़े समय के लिए ही स्कूल गये थे,
कुल मिला कर एक वर्ष से भी कम समय के लिए.
लेकिन वह बहुत सारी कहानियाँ जानते थे.
“जो बातें मैं जानना चाहता हूँ वह सब किताबों में हैं,”
उन्होंने कहा था.
“मेरा सबसे अच्छा मित्र तो वही है जो मुझे
ऐसी किताब लाकर दे जो मैंने पढ़ी न हो.”
एब को बड़े शब्दों के हिज्जे याद रखना अच्छा लगता था.
उन शब्दों का उपयोग करने से पहले वह
उनके हिज्जे सीख लेते थे.
जिस तरह एक गिलहरी सर्दियों के लिए
अखरोट जमा कर लेती है वैसे ही वह इन शब्दों को
अपने मस्तिष्क में इकट्ठा कर लेते थे.
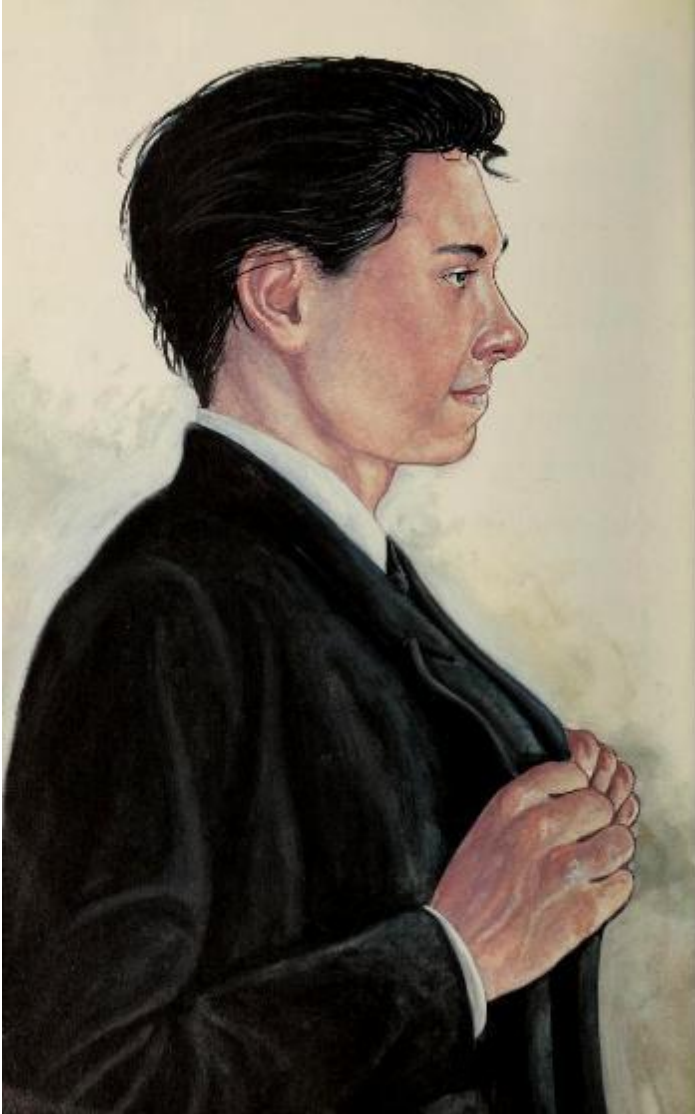
एब ने अपना नया सूट पहना और तैयार हुए.
उन्होंने अपने घने बालों को कंघा किया.
फिर वह सीधे खड़े हुए-
वह छह फुट चार इंच लंबे था.
भीड़ में भी वह तुरंत पहचाने जाते थे.
उनके पिता उन्हें
'संसार का सबसे बेडौल व्यक्ति' बुलाते थे.

एब ने अपने नये सूट की बांह को
धीरे से थपथपाया.
यह उनका पहला नया सूट था.
आमतौर पर वह घर में बुनी गयी कमीज़
और मृगचर्म की पतलून पहनते थे,
जो इतनी छोटी होती थी कि
उनके टखनों तक कभी पहुँच ही न पाती थी.

यह सूट खरीदने के लिए उन्होंने,
लकड़ी की बाड़ बनाने हेतु,
सैंकड़ों लट्ठे काटे थे.
उस काउंटी में एब के समान कोई भी
लट्ठे न काट सकता था.
लट्ठे काटने के लिए कुल्हाड़ी को कितनी ऊँचाई से
घूमा कर लट्ठे पर प्रहार करना चाहिए
और किस समय पूरी ताकत लगानी चाहिए,
वह अच्छी तरह जानते थे.

एब कई औज़ारों का निपुणता से उपयोग करते थे.
हथौड़ी और आरी चलाना उन्हें आता था
और वह फूस काटना भी जानते थे.
एक हिरण की खाल वह उतार सकते थे
और पकाने के लिये सूअर का गोश्त भी काट सकते थे.

लेकिन उस दिन जब वह नगर की ओर जा रहे थे
ऐसी कोई बात उनके मन में न थी.
वह अपने भाषण के विषय में सोच रहे थे.
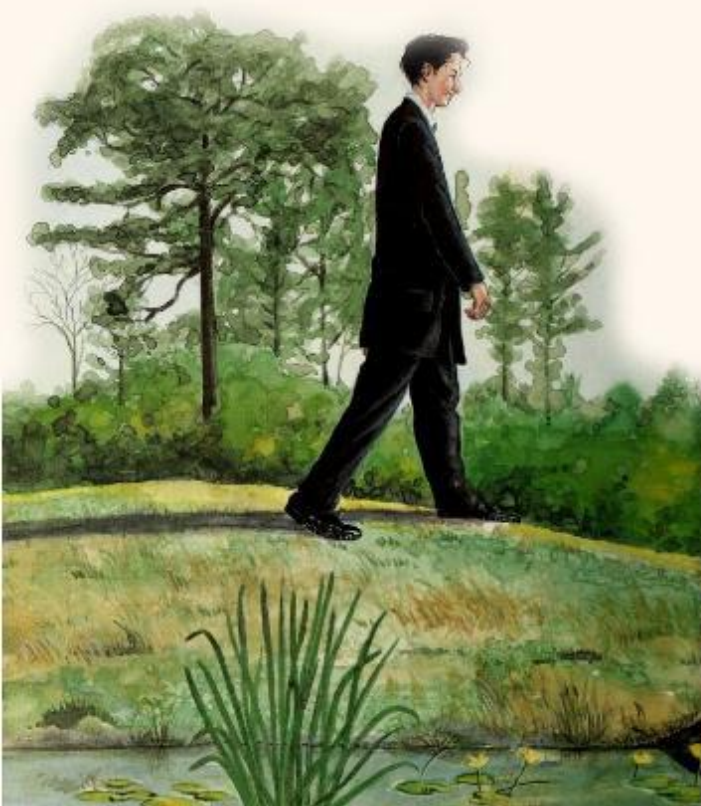
लंबे-लंबे डग भरते वह
झटपट चल रहे थे.
पाँच या दस मील चलना उनके लिए
टहलने समान ही था.
जब वह इंडियाना में रहते थे
तब वह नौ मील चल कर स्कूल जाते थे.
एक बार एक वकील का भाषण सुनने को
वह इतने आतुर थे कि
चौंतीस मील पैदल चले थे.
एब सोच रहे थे कि क्या
उनका भाषण सुनने के लिए भी लोग
उतने ही उत्सुक होंगे.
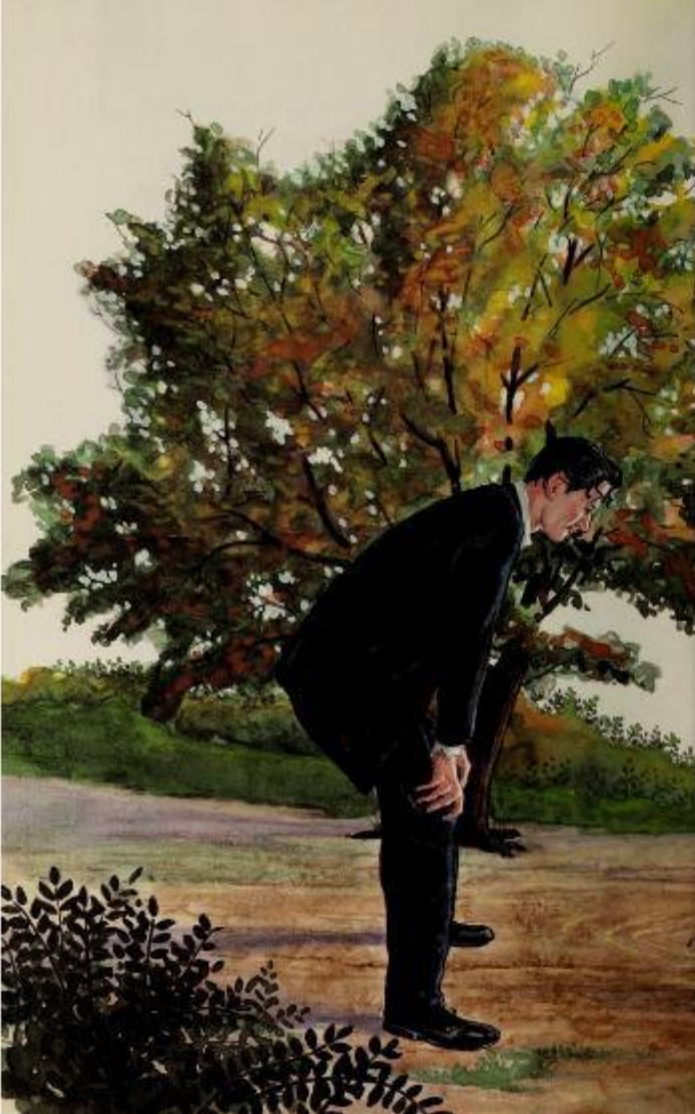
जैसे ही एब एक पहाड़ी से नीचे आये
उन्होंने एक सूअर देखा
जो कीचड़ में लोट रहा था.
सूअर ज़ोर-ज़ोर से फुफकार रहा था
और कराह रहा था.
पहले तो एब को लगा कि
सूअर कीचड़ में खेल रहा था.
“तुम तो बहुत मस्ती कर रहे हो,”
उन्होंने कहा. लेकिन फिर उन्होंने ध्यान से देखा.
उन्हें लगा कि सूअर बाहर निकलने के लिए
संघर्ष कर रहा था.
“मुझे लगता है कि तुम इस कीचड़ में फंस गये हो,”
एब ने कहा.
सूअर सिर्फ फुफकारा – और थोड़ा छटपटाया.

एब किसी पशु को कष्ट में नहीं देख सकते थे.
जब वह आठ वर्ष के थे
तब उन्होंने अपने केबिन के निकट
एक पेरू पक्षी को गोली मारी थी.
लेकिन उस मरे हुए पक्षी को देख कर
उनके मन में अजीब से भाव उजागर हुए थे.
उस दिन के बाद
उन्होंने पशु-पक्षियों का शिकार करना बंद कर दिया था.
अगर किसी को भी पशुओं के साथ
निर्मम व्यवहार करता देखते तो
झट से उस व्यक्ति का वह विरोध करते थे-
अगर कोई एक चींटी पर पाँव रखता तब भी.
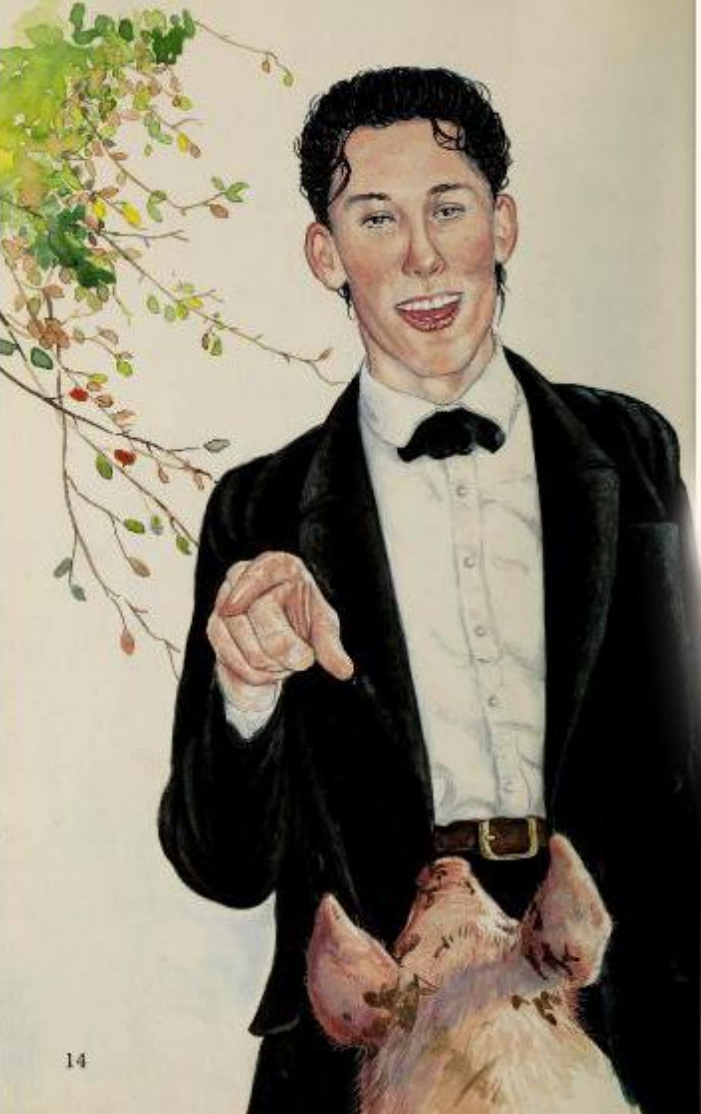
बेशक कोई भी उस सूअर पर
पैर रखने वाला नहीं था.
और उसका जीवन खतरे में नहीं था.
वह बस अकेला था और डरा हुआ था.
“मुझे खेद है, नन्हे सूअर,” एब ने कहा.
“मैं इस समय तुम्हारी कोई सहायता
नहीं कर सकता.
मैंने अपना नया सूट पहन रखा है
और मुझे एक घंटे की भीतर
नगर में एक भाषण देना है.”

कीचड़ से भरे उस गड्ढे के निकट से
घूम कर एब आगे बढ़ गये.
उस सूअर का विचार अपने मन से हटाने का
उन्होंने प्रयास किया.
इस समय उनका भाषण ही उनके लिए
सबसे ज़रूरी था.
वह उन लोगों को विषय में सोचने लगे
जो उनका भाषण सुनने आ रहे थे.
“भाषण के विषय में सोचते रहो,”
उन्होंने अपने आप से कहा.
लेकिन कोई लाभ न हुआ.
न चाहते हुए भी वह बार-बार
उस अभागे सूअर के विषय में सोचने लगते.

आखिरकार, एब रुक गये.
सूअर एक मनुष्य नहीं था,
लेकिन फिर भी वह उनकी सहायता
पाने योग्य था.
एब ने एक आह भरी
और कीचड़ से भरे गड्ढे की ओर वह लौट आये.
सूअर अभी भी उस कीचड़ में
फंसा हुआ था.

"घबराओ नहीं," एब ने कहा.
"हम तुम्हें एक पल में बाहर निकाल देंगे."
एब एक चैंपियन पहलवान थे.
लोगों का मानना था कि
जितने भी पहलवान उन्होंने देखे थे
एब शायद उन में सबसे ताकतवर थे.
लेकिन सूअर यह बात न जानता था.
उसे इस बात का पता न था कि
वह उसकी सहायता करने का प्रयास कर रहे थे.
इसलिए एब से बचने का
उसने भरसक प्रयास किया.

जब तक एब उसे कीचड़ से बाहर
निकालने में सफल हुए,
तब तक वह कीचड़ में पूरी तरह
लथपथ हो गये थे.

एब ने अपने सूट की ओर देखा
और अपना सिर हिलाया.
लेकिन अब उनके पास इतना समय न था
कि वह घर लौट कर
साफ़ कपड़े पहन आते.
इसके अतिरिक्त, पहनने के लिए इससे अच्छे कपड़े
उनके पास थे भी नहीं.

जब एब नगर पहुंचे तो
उन्होंने देखा कि लोग इकट्ठे हो रहे थे.
अब तक किसी पेड़ के ठूँठ या
किसी बाड़ पर खड़े हो कर
वह किसानों से बात कर लिया करते थे.
लेकिन आज का भाषण
मित्रों से गपशप करने जैसा नहीं था.

एब के श्रोता अपने भविष्य के
सपनों के विषय में
उनके विचार सुनने आये थे.
वह सब इस आशा से आये थे
कि जिन विचारों और भावनाओं को
वह स्वयं व्यक्त करने में असमर्थ थे
उन्हें एब अपने शब्दों में बता पायेंगे.

एब का भाषण नदी और
लोगों के जीवन में उस नदी के
महत्व के विषय में था.
नदी उन्हें पानी तो देती ही थी,
वह उनकी आटा-चक्कियों और
लकड़ी के आरों को भी चलाती थी.

इतना ही नहीं, सामान लाने और ले जाने के लिए भी
नदी एक बढ़िया रास्ता थी.
देश तेज़ी से विकसित हो रहा था,
एब ने समझाया.
इसलिए नदी की यात्रा को
सरल, सुरक्षित बनाना अनिवार्य हो गया था.
ऐसा सुनिश्चित करने से
सब को लाभ हो सकता था.
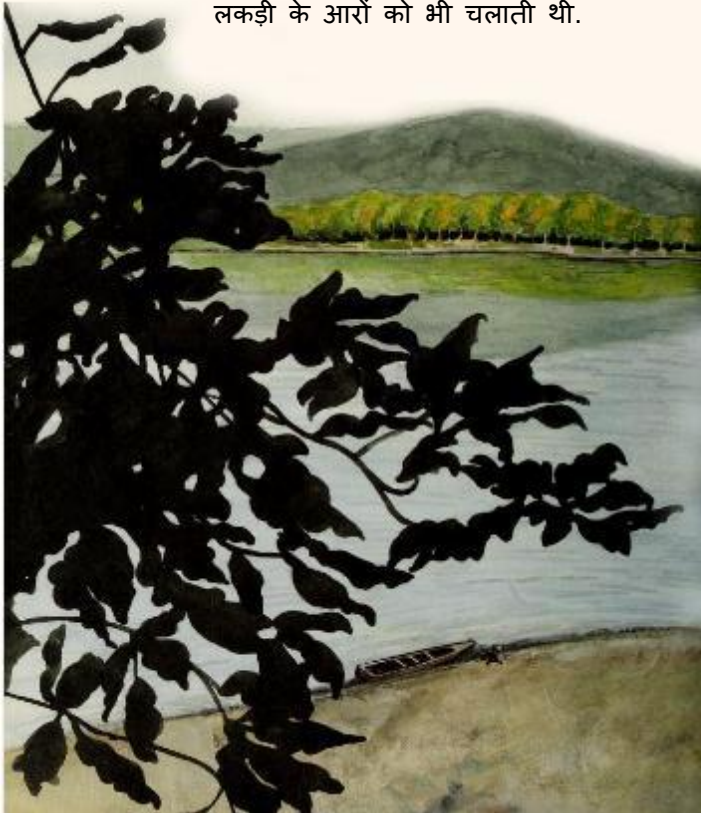
बोलते समय एब चिल्ला नहीं रहे थे,
न ही वह श्रोताओं को उत्तेजित कर रहे थे.
वह सीधी-सादी भाषा में बात कर रहे थे,
एक-एक कर वह सारे तथ्य बताते थे,
फिर उन तथ्यों को जोड़ कर
सबको अपना दृष्टिकोण समझाते थे.
शब्दों के प्रवाह के साथ-साथ
वह अपने हाथ भी हिलाते थे,

हाथों को कभी जेबों के अंदर ले जाते
और कभी बाहर निकालते थे.
जब कोई व्यक्ति इस तरह बात करता था
कि वह उसे समझ न पाते थे
तो उन्हें अच्छा न लगता था.
इसलिए वह ध्यान रखते थे
कि वह ऐसी कोई बात न कहें
जो सुननेवालों की समझ से परे हो.
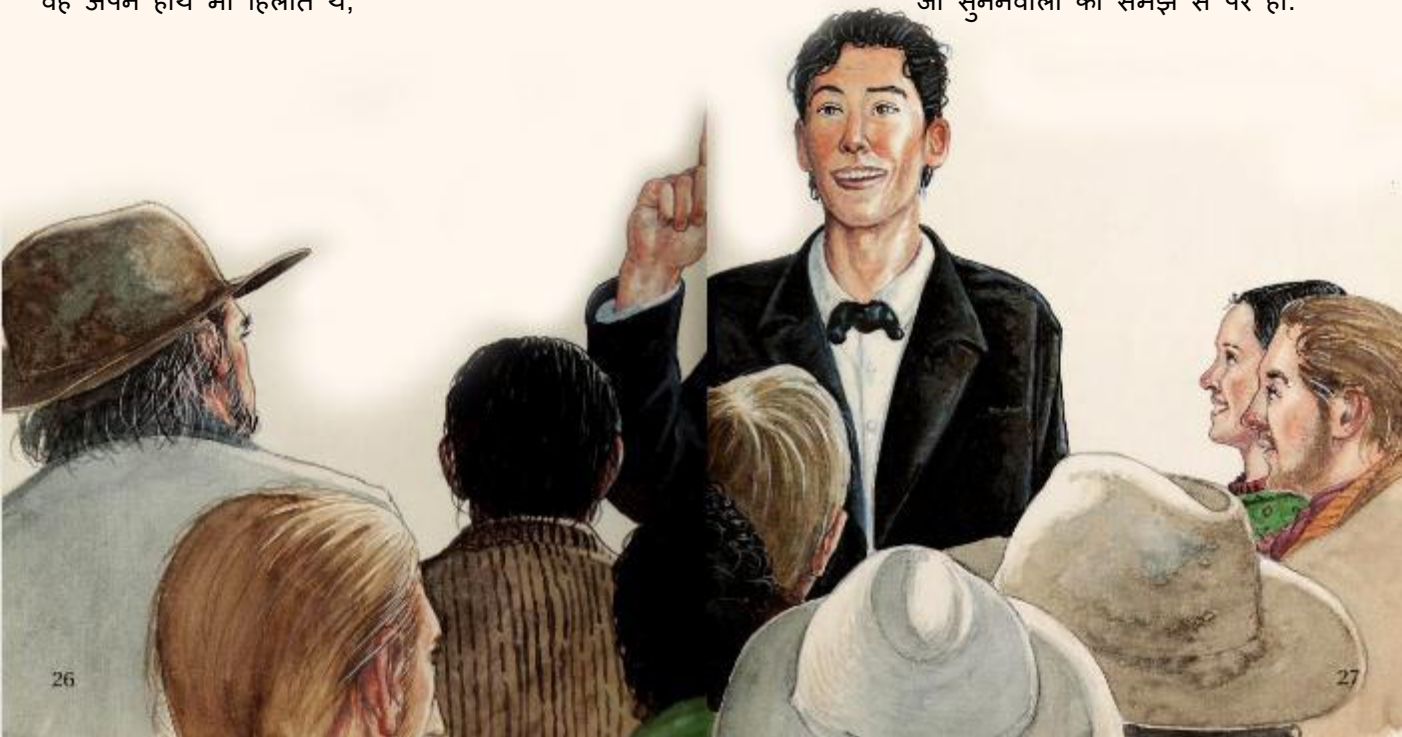
उनके सूट पर अभी भी कीचड़ चिपका हुआ था,
लेकिन कोई भी इस बात पर ध्यान न दे रहा था.
लोग उनकी बातें सुनना चाहते थे,
उन्हें इस बात की बिलकुल परवाह नहीं थी
कि एब कैसे दिख रहे थे.

उनका भाषण सुनते समय लोग बीच-बीच में अपने सिर हिला
कर संकेत दे रहे थे कि वह उनकी बात समझ रहे थे
और जब भाषण समाप्त हुआ तो उन्होंने तालियाँ बजाईं.
उनका भाषण लोगों को बहुत अच्छा लगा था.
अरे, सूअर को भी उनकी बातें अच्छी लगीं थी.
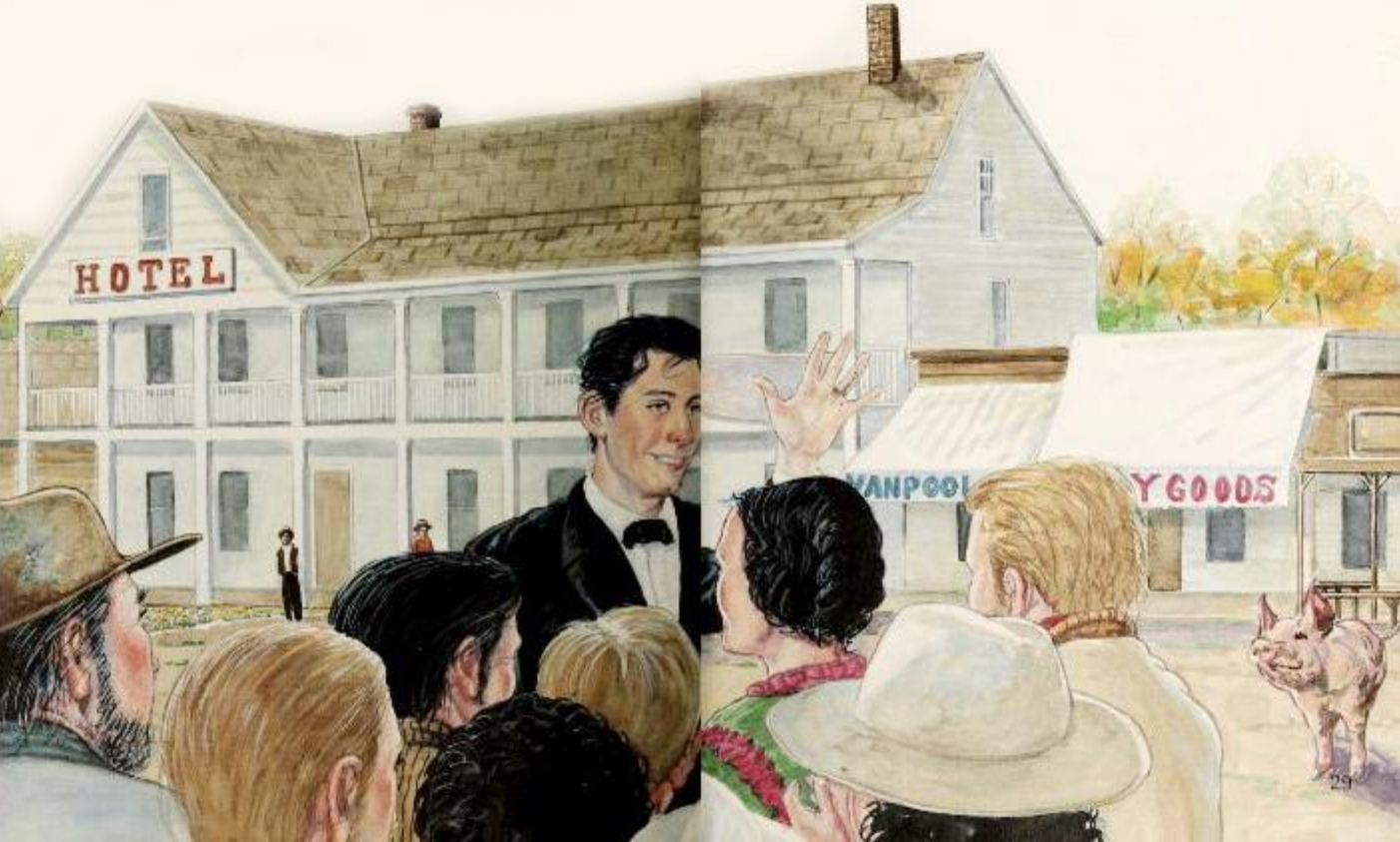
यह पुस्तक अब्राहम लिंकन के विषय में प्रचलित एक कहानी पर आधारित है. उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का क्रम नीचे लिखा गया है :

1809	होजनविल, केंटकी में लिंकन का जन्म.
1816	लिंकन इंडियाना आये.
1817	माँ का निधन, सारा बुश जॉनसन के साथ पिता का दूसरा विवाह
1818	उनका परिवार इल्लिनाए आ गया.
1834	लिंकन प्रदेश की विधान सभा के लिए चुने गये. वकालत की पढ़ाई की.
1837	लिंकन प्रदेश की राजधानी स्प्रिंगफील्ड आये.
1842	मैरी टॉड के साथ उनका विवाह, बाद में चार संताने हुईं.
1846	यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस के लिए चुने गये.
1858	यू एस सेनेट के लिया चुनाव लड़ा पर स्टेफेन डगलस से हार गये.
1860	लिंकन यूनाइटेड स्टेट्स के राष्ट्रपति चुने गये.
1861	सिविल वॉर की शुरुआत
1863	दास प्रथा समाप्त करने की घोषणा, गैटिसबर्ग का भाषण, देश की अखंडता बनाये रखने का आह्वान.
1864	लिंकन दूसरी बार राष्ट्रपति चुने गये.
1865	सिविल वॉर 9 अप्रैल को समाप्त. पाँच दिन बाद 14 अप्रैल के दिन फोर्ड थिएटर में लिंकन की हत्या.